

- ii अन्य नासिक्य व्यंजनों के साथ संयुक्त व्यंजन के रूप इस प्रकार बनेंगे-

जैसे: वाङ्मय, अन्य, अन्वय, सम्हालना, ताम्र, अम्ल

- iii अंग्रेजी और उर्दू शब्दों में स, श, ज़ से पहले 'न' के उच्चारण के लिए अनुस्वार लिखना चाहिए।

जैसे: पेंशन, सस्पेंशन, मुंसिफ, मंजूरी, मंथली, स्टूडेंट आदि।

- v तत्सम शब्दों के अंत में अनुस्वार का प्रयोग 'म्' का सूचक है।

जैसे: सत्यं (सत्यम्), शिवं (शिवम्) एवं (एवम्), अहं (अहम्) आदि।

- v प्रत्येक वर्ग का पंचमाक्षर संयुक्त व्यंजन के रूप में अपने वर्ग के अक्षरों के साथ नासिक्य ध्वनि का ही उच्चारण योग बनाता है।

जैसे: 'क' वर्ग = 'अंक, पंख, गंगा, संघ आदि।

'च' वर्ग = चंचल, पंछी, गंज, झंझट

'ट' वर्ग = घंटा, कंठ, दंड, षंढ

'त' वर्ग = महंत, पंथ, वृंद, धंधा

'प' वर्ग = लंपट, गुंफन, कंबल, रंभा

- vi पंचम वर्णों का द्वित्व तत्समान अर्ध अक्षर से लिखा जाना ही अपेक्षित है।

जैसे: अन्न, निषण्ण, विषण्ण, सम्मेलन, सम्मान। (अंन, निषंण, संमेलन आदि नहीं।)

6. अनुनासिक चिह्न (चंद्रबिंदु ँ)

- (i) अनुनासिक चिह्न व्यंजन न होकर स्वरों का ध्वनिगुण है। इसमें स्वर के उच्चारण में मुख के साथ-साथ नाक से भी हवा निकलती है- अँ, आँ, उँ, ऊँ ऐँ।

जैसे: हँसना, आँख, उँगली, ऊँट, खाएँ।

- (ii) वर्ण की शिरो रेखा के ऊपर मात्रा हो तो मुद्रण सुविधा की दृष्टि से अनुनासिकता को (बिंदी (ं) के रूप में दिखाया जाता है। जैसे- सिंचाई, तैंतीस, गेंदा, औंधा आदि।

7. हल् चिह्न

- i स्वर रहित व्यंजन वर्ण में हल् चिह्न (ः) लगता है। ऐसे वर्ण को हलंत वर्ण कहते हैं। संस्कृत में 'हल्' इस शब्द से व्यंजन वर्णों का ही बोध होता है।

जैसे: विद्या, वाक्+ईशः, प्रसिद्ध, तत्, सत् आदि।